फरीदाबाद

मजदूर समाचार

मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

अपने बारे में, इस अखबार के बारे में बात करने आप किसी भी दिन मजदूर लाइब्रेरी आ सकते-सकती हैं।

नई सीरीज नम्बर 111 सितम्बर 1997

क्यों जानें ? क्या-क्या जानें ? कैसे जानें ? क्या-क्या कर सकते हैं ? (8)

नकेलें बनाम साझेदारियाँ

मजदूरों के रोज के सिरदर्द

नकेलें नहीं रहेंगी तो ऊँच-नीच की सीढियाँ रहेंगी कैसे?

ऐ दोस्तो, जरा देख के
आगे नकेल लीडर की
पीछे नकेल अफसर की
दाँये नकेल कानून की
बाँये नकेल डन्डे की
ऊपर नकेल किस्मत की
नीचे नकेल रोटी की।

ऐ दोस्तो, जरा समझ के
एक निशान
एक नेता
एक नारा
एकता-एकता
है राग नकेलों का।

ऐ दोस्तो, जरा सम्भल के
ऊपर-नीचे, दाँये-बाँये
आगे-पीछे, सब के पीछे
मैनेजमेन्ट-मैनेजमेन्ट
मैनेजमेन्टें!

नकेलें कई प्रकार की होती हैं
बड़ी-बड़ी से छोटी-छोटी
भीमकाय आकार से ले कर सूक्ष्म पारदर्शी
हल्के झटके से ले कर भारी कसाव लिये
तन को तानने से ले कर मन को बींधने वाली
हाथ पकड़ कर खींचने से ले कर रिमोट कन्ट्रोल वाली
होती हैं नकेलें।

तन व मन को बाँध कर नियन्त्रण रखने का नकेलें एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन हैं।

जलूस-तालाबन्दी-हड़ताल की
सृष्टा हैं नकेलें
खींच कर भीड़ बनाती हैं नकेलें
भीड़ को खींचती हैं नकेलें
दमन के लिये निशाने रचती हैं नकेलें।

ऊँच-नीच की सीढियों को टिकाये रखती हैं नकेलें!

लीडर

कान-कान पर आते लीडर
गीत बेसुरे गाते लीडर
सुखद नींद में विघ्न डालते
ऐसा शोर मचाते लीडर।
सूई मुफ्त लगाते लीडर
सारा जिस्म सुजाते लीडर
अच्छे खासे स्वस्थ व्यक्ति को
तुरन्त बीमार बनाते लीडर।
नहीं पकड़ में आते लीडर
बुद्धु हमें बनाते लीडर
खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे
ऐसा मन कर जाते लीडर।
ऊँच नीच न माने लीडर
खून सभी का छाने लीडर
जो भी मिले उसी को चूसें
सच्चे समदर्शी हैं लीडर।।

(पिलखुआ के एक मजदूर, राष्ट्रपाल की कविता से प्रेरित।)

मैनेजमेन्टों के रोज के सिरदर्द

ऊँच-नीच की सीढ़ियों को चाट सकती हैं साझेदारियाँ।

साझेदारियाँ
अपनेपन का भाव लिये हैं साझेदारियाँ
हर एक के बस में जो हो
वही करती हैं साझेदारियाँ।

टोलियों में होती हैं साझेदारियाँ
सीधी-सीधी मन की बातें
हँस कर बातें, खुल कर बातें
होती हैं
छोटी-छोटी टोलियों में।

सीधी-सादी सब की बातें
भिन्न-भिन्न बातें
सतरंगी बातों की
इन्द्रधनुषी छटा खिलती है
टोलियों के तालमेल में
समस्याओं को चौतरफा निगाहों से
देखती हैं
टोलियों की साझेदारियाँ।

टोलियाँ कई प्रकार की होती हैं
साथ-साथ उठने-बैठने वालों की बनती हैं
एक टोली में 7-8 जने-जनी होते-होती हैं
टोलियों का तालमेल लाखों-करोड़ों की
साझेदारी की क्षमता लिये है
टोलियों में विविधता होती है
विभिन्न स्थानों पर कार्यरत रहती हैं
दमन के औजारों को निशाना उपलब्ध नहीं करती टोलियाँ।

लगातार, सतत, निरन्तर विरोध का
एक महत्वपूर्ण साधन हैं टोलियाँ।

नवरंग की बहार
मरती बेशुमार
है टोलियों का राग।

ऊँच-नीच की सीढियों को चाट जायेंगी साझेदारियाँ।

(जारी)

इस अंक की हम पाँच हजार प्रतियाँ ही फ्री बाँट पा रहे हैं। पाँच हजार मजदूर अगर हर महीने एक-एक रुपया दें तो दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद-121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

सोचो तो है, ना सोचो तो नहीं है !

पिछला परिवार का प्यार नहीं पचा तो हमने परिवार छोड़ चले। साल भर बेघर होके भटकने के बाद नई किस्म के परिवार दिखाई दिया। वहाँ के बड़े भाई से मिलने पर उन्होंने बताया कि यहाँ कोई बड़ा-छोटा, अमीर-गरीब नहीं है, सब बराबर हैं। सब मिलजुल कर काम करते हैं। पुरानी अनुभवों से मन मेरा वैसे ही कुछ ज्यादा ही दुखी हो रखा था। इसलिये यह तो नहीं कह सकता कि बहुत उम्मीद लेके मैंने नई नवेली दुल्हन की तरह इस नये परिवार में प्रवेश किया। खैर। शुरू के तीन महीने मुझे परखने के लिये रखा गया। कहा गया कि खाने को तुम्हें मुफ्त में रोटियाँ मिल रही हैं, इससे ज्यादा क्या चाहिये। बात तो सही है !!

दरअसल, साल भर की ठोकरों के बाद वही सुहावनी लगी। नई परिवार में दाखिल होने के एक दिन बाद मैनेजमेन्ट पँडत हमें पाठ पढाने आये। कहने लगे, नये जमाना का भगवान मन है। अगर हम भूखे नहीं हैं तो हम भूखे नहीं है। हकीकत में भूख नाम से कोई चीज ही नहीं होता है। सब कुछ सोच पे निर्भर करता है। फिर हमने सोचा, अगर यह बात है तो, हम सोचेंगे और काम पूरा हो जायेगा। फिर काम करने का क्या जरूरत है ? काम चीज ही बेकार है।

15 अगस्त 1997 —**पार्थ**

एस्कोर्ट्स एनसिलरीज

एस्कोर्ट्स इम्पलाइज एनसिलरीज लिमिटेड, 20/4 मथुरा रोड़ के टूलरूम में धड़ल्ले से रिश्वत चली हुई है। इस टूलरूम में 8 घन्टे का ओवर टाइम लगाने के बाद "कैन्टीन के" 25 रुपये मिलते हैं, और अपनी दिहाड़ी के पैसे। तो टूलरूम के इन्चार्ज के साथ रिश्वत सैट कर ली जाती है। कैन्टीन के पैसे इन्चाज को दिये जाते हैं। अगर महीने में 25 दिन का ओवर टाइम लगाया तो इन्चार्ज के 625 रुपये रिश्वत के बन गये। इन्चार्ज ये रिश्वत की सैटिंग कुछ ही लोगों से कर पाया है।

7 अगस्त 97 — एस्कोर्ट्स एनसिलरीज का एक मजदूर

फैशन टीम, ओखला

4 जुलाई को फैशन टीम, बी—26 ओखला फेज—1 की मैनेजमेन्ट ने तालाबन्दी करके मजदूरों को फैक्ट्री से निकाल दिया। लेबर कोर्ट के आदेशानुसार 22 जुलाई को मजदूर अपना वेतन लेने फैक्ट्री की ओर जा रहे थे तब मैनेजमेन्ट के गुन्डों ने वरकरों पर हमला किया। पुलिस देखती रही। इससे कुछ दिन पहले भी मैनेजमेन्ट के गुन्डों ने मजदूरों पर हमला किया था और तब पुलिस ने भी वरकरों पर लाठीचार्ज कर उन्हें लॉक अप में बन्द कर दिया था। फैशन टीम मजदूरों से जबरदस्ती रिजाइन पत्र पर हस्ताक्षर करवाने का काम गुन्डे और पुलिस दोनों कर रहे हैं।

(जानकारी हमने अगस्त के आरम्भ में मिले एक पर्चे से ली है।)

शिफ्ट वर्क - नाइट वर्क

अर्वाचिन युग में मानव को दिन छोटा लग रहा है। प्राचीन युग में ज्यादातर कामकाज दिन में होता था। मगर अब तो काम रात के समय भी किया जाता है या करवाया जाता है। कई लोग इस काम को स्वयं स्वीकार करते हैं तो किसी को मजबूरन करना पड़ता है। इनके कारणों में हैं : बढती हुई बेरोजगारी, मँहगे यन्त्र-सामग्री-जगह का महत्तम उपयोग करना। काम चाहे कितना भी आवश्यक हो या अनावश्यक मगर रात को काम करने में जोखिम-तकलीफें हैं ही।

व्यवसायिक स्वास्थ्य सुरक्षा के अनुसार व्यवसायिक काम करने वालों को कई सारी भौतिक जोखिमों को सहना पड़ता है। ये सब हैं : आवाज-शोर, गर्मी, प्रेशर, विकिरण, तनाव, काम के समय एक ही स्थिति में शरीर का जकड़े रहना, आँखों पर ज्यादा बोझ और शिफ्ट वर्क। शरीर ये सब कुछ मात्रा तक सह पाता है मगर जब मात्रा बढती है तब स्वास्थ्य पर इनका बुरा प्रभाव पड़ता है। रूई, सिलिका, एस्बेस्टोस, लकड़ी, कोयला, माइका, रेडियोएक्टीव पदार्थों और धातुओं आदि सब चीजों की रज-डस्ट भी अधिक मात्रा में होती है तो रोगजन्य हो सकती है। कई सारे रसायन भी ऐसे हैं जो स्पर्श से, श्वसन से या पेट में जाने से स्वास्थ्य के लिये तकलीफें पैदा कर सकते हैं। अगर ये जोखिमें एक से ज्यादा हों तो उन सब का सामुहिक प्रभाव स्वास्थ्य के लिये खतरनाक भी हो सकता है।

इस तरह शिफ्ट वर्क एक प्रकार का भौतिक जोखिम गिना गया है।.....

(आगे अगले अंक में) — नवीन छत्रोला, बड़ौदा

पिलखुआ नगरी

खुले गन्दे नालों की नगरी पिलखुआ में मच्छर और मक्खी पँखा चलता रहता है फिर भी खाना खाते समय खाने का स्वाद बढाने के लिये 10 - 5 छोटी इलायची की जगह जरूर कवर करेगी। मच्छर भाई दिन डूबते ही अपने प्रेमियों को एक सैकेन्ड सोने न देने के लिये, क्योंकि सुहागरात में किसी प्रकार की बाधा न आ जाये, अपनी नोकीली सूँड से आलिंगन सुरीली आवाज के साथ करते रहते हैं। मक्खियाँ हमने देखा है कि शाम होते ही इधर-उधर बैठना शुरू हो जायेंगी लेकिन पिलखुआ का मीठा पानी समझ कर वह रात को भी आपके तालाब नुमा शरीर पर पँखा चलता रहता है, बत्ती जलती रहती है, वह भी तैरती हुई आपके शरीर के रसस्वादन में मस्त रहती है और आप हैं कि हाथों से उन्हें भगाने का अनायास प्रयास करते रहते हैं। ऐसे में पूरी रात मच्छर भाई-मक्खी बहन के साथ वार्तालाप के साथ सवेरा होता है। फिर स्वागत करता है पिलखुआ का सड़कों-गलियों पर कूड़े-करकट का जगह-जगह पड़ा ढेर, बदबू से भरी मस्त सवेरे की हवा, उसके बाद बिना हूटर वाले कारखाने जिनमें पहुँच कर हमारे हाई स्किल्ड कारीगर भाई बुनाई व छपाई करते हैं।

कारखाने देखने में बड़ी-बड़ी कोठियों जैसे लगते हैं लेकिन अन्दर जैसे शेर को पिंजड़े में बन्द किया जाता है। बाहर गेट भी वैसा होता है। बड़ा गेट बन्द। एक छोटा गेट उसी में लगा होता है उसे खोल दिया जाता है।

अब शुरू होती है खटर-पटर की आवाज जिसको कहते हैं सट नली सट तार। आवाज बढ़ती जाती है। इतनी आवाज होने लगेगी कि बगल खड़े हुये आदमी से कुछ कहना है तो बहुत ताकत लगा कर बोलना पड़ेगा तभी दूसरे तक आवाज सुनाई देगी। और नाक, कान, मुँह से रूई का गर्दा खाना शुरू होता है।

इन आवाजों को दूसरे रूप में प्रदूषण भी सरकार घोषित करती है। हाई स्किल्ड का इन कारीगरों को सरकार ने तकमा भी अपने गजट की कापी में दे रखा है। इनको दिहाड़ी के नाम पर 30 से 50 रुपये के एवरेज से दिहाड़ी दी जाती है क्योंकि यहाँ इनका नाम कुटीर उद्योग या घरेलू उद्योग के नाम से जाना जाता है। इसी शब्दजाल का प्रयोग करके पिलखुआ में मैनेजमेन्टों ने हाई स्किल्ड कारीगरों को पीस रेट में उलझा रखा है और उनको न्यूनतम मजदूरी तक नही दी जाती तथा वे दो-चार पैसे के लालच में 16-18 घन्टे काम करते रहते हैं। इस तरीके से उनका मानसिक, शारिरिक तथा पारिवारिक शोषण खुल्लम-खुल्ला किया जा रहा है। पीस रेट लगाने का कोई नियम यहाँ दिखता नहीं, मनमाना रेट बाँध दिया जाता है। वह भी देते समय उल्टा-पुल्टा कर दिया जाता है क्योंकि कारीगरों को रेट निकालना तो आता नहीं और उनके हिसाब से या पूछ कर तो रेट निकाला नहीं जाता। मैनेजमेन्टों की मर्जी चलती है। पूछने पर कह दिया जाता है कि काम करना है तो करो नहीं तो जाओ। जबकि आज राज मिस्त्री के साथ लेबर या अनस्किल्ड वरकर भी, किसानी में काम करने वाला भी 90-100 रुपये की दिहाड़ी लेता है और 8 घन्टे की डियुटी पूरी किया कि काम बन्द।.

..... (बाकी अगले अंक में)

9 अगस्त 97 — पिलखुआ में एक मजदूर

मैनेजमेन्टों के शिकंजे

मैनेजमेन्टों के लक्ष्य

✂ काम की रफ्तार बढाना ✂ कम मजदूरों से ज्यादा काम करवाना ✂ कम से कम वेतन देना ✂ मजदूरों की मेल-जोल, पहलकदमियों को बिखेरना ✂ नीरस को रंगीन दिखाना ✂ एकताओं की रचना द्वारा मजदूरों में सिरफुटौव्वल करवाना ✂ दहशत का माहौल बनाना ✂ डिसिप्लिन, यानि, मजदूरों पर जकड़ को मजबूत करना ✂ बिना नागा, हर पल काम करवाना, और बेशक अपना–अपना कट-कमीशन सुनिश्चित करना

काम करो ! काम करो ! तनखा का नाम न लो !!

जीने के लिये आज तनखा जरूरी है। तनखा के लिये तन व मन बेचने पड़ते हैं। जलालत-भरा यह चक्रव्यूह जन्म से मृत्यु तक हमें घेरे रहता है।

इधर हालात यह बनी हैं कि इस-उस बहाने वेतन में कटौती वाले रुटीन का स्थान वेतन ही नहीं देना लेता जा रहा है। सरकारी कारखानों के मजदूरों की बकाया तनखा की राशि एक हजार करोड़ रुपये हो गई है। श्रम मंत्री कहता है कि वह कुछ नहीं कर सकता। रूस में एक फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट ने 18 महीने तनखा नहीं दी और फिर बकाया वेतन के बदले हर वरकर को एक-एक ताबूत दे दिया अन्तिम क्रिया के लिये।

फरीदाबाद में

कई फैक्ट्रियों में मैनेजमेन्टों ने महीने-दो महीने-चार महीने-छह महीने तनखायें नहीं दे कर जो मंच तैयार किया है उस पर झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट कलात्मक नाच नाच रही है।

नाच की मुदायें

मार्च 1996 से तनखा नहीं। जनवरी 97 में दिल्ली के लीडरों का 45 दिन में समस्या समाधान का आश्वासन। चार महीने बाद 4 जून को दिल्ली लीडर ने समझौता बताया। मजदूरों के 14 महीनों के बकाया वेतन का समझौते में जिक्र तक नहीं। मजदूरों ने उसे ठुकरा दिया। दस दिन बाद फिर मीटिंग करने की कह कर दिल्ली के लीडर खिसके।

6 जून को झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट और यूनियन लीडरों ने डी. एल.सी. के सामने मजदूरों द्वारा ठुकराये समझौते पर धारा 12(3) के तहत गुपचुप दस्तखत किये। मजदूरों को इसका पता तब चला जब जुलाई में समझौते के आधार पर भारी कटौती वाला वेतन उन्हें लेने को कहा गया। कुछ मजदूरों का तो 25 रुपये वेतन बनाया गया था और चार मजदूरों की मृत्यु पर सहायता के 40 रुपये कटने व यूनियन के लिये चन्दे के 50 रुपये काट लिये जाने के बाद उनकी माइनस तनखा बनी! महीने-भर काम के बीस-पचास-ढाई सौ रुपये !! मजदूरों के भारी विरोध को देख कर डी.एल.सी. ने अपनी चमड़ी बचाने के लिये 6 जून को हस्ताक्षरित एग्रीमेन्ट को गैरकानूनी करार देते हुये 30 जुलाई को यह कह कर कैन्सल कर दिया कि यूनियन लीडरों और झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट ने धोखे से उनसे दस्तखत करवाये थे।

एक अन्तरिम कमेटी के फेल हो जाने पर लीडरों ने नई अन्तरिम कमेटी बनाई। नई कमेटी का एक ही बात के लिये हाँ और ना का नाच 22 अगस्त को तब खत्म हुआ जब लीडरों ने एक हजार रुपये एडवान्स के बदले में प्रत्येक मजदूर को अलग-अलग फार्म पर दस्तखत कर धारा 18 (1) के तहत 6 जून का समझौता मानने को कहा। मजदूरों की 17 महीनों की बकाया तनखा बट्टे-खाते में और सर्विस-ग्रेच्युटी की राशि निशाने पर! पैसे-पैसे के लिये मोहताज झालानी टूल्स मजदूरों ने 1000 रुपये ठुकरा दिये। व्यापक विरोध को देख कर लीडरों ने फिर पलटा खाया और नये नाच के लिये एक हफ्ते का समय माँगा।

व्हर्लपूल की भंवर

केल्विनेटर का व्हर्लपूल कारपोरेशन तथा टेकमसेह लिमिटेड का हिस्सा बन जाने के बाद नई मैनेजमेन्ट ने यूनियन लीडरों से एग्रीमेन्ट की। साम-दाम-दण्ड-भेद से दो हजार वरकरों व स्टाफ सदस्यों को नौकरी से निकाल दिया और बचे तीन हजार लोगों पर काम का बोझ तीन गुणा कर दिया – पहले के 2000 की जगह 3150 फ्रिज का प्रतिदिन उत्पादन निर्धारित।

फिर कुछ समय पश्चात व्हर्लपूल के बड़े साहबों ने फरमाया कि कम्पनी में कोई भी पुराना कर्मचारी नहीं रखा जायेगा। वार्षिक वेतन वृद्धि नहीं करना, स्थानान्तरण करना, चोरी आदि के आरोप में फँसाने का सिलसिला। इसके बाद 26.6.97 को बड़े साहबों ने नई रणनीति बनाई। मजदूरों की 15 दिन की छुट्टी कर दी और फिर स्टाफ के 124 लोगों को अविलम्ब मद्रास, कोचीन, पूना, हैदराबाद, पॉण्डीचेरी, पटना, गुवाहटी, अहमदाबाद, बँगलौर जा कर तीन दिन के अन्दर ड्युटी ज्वाइन करने के ट्रान्सफर पत्र दे दिये। उपरोक्त स्थानों पर व्हर्लपूल की कोई प्रोडक्शन यूनिट नहीं है। इन ट्रान्सफर पत्रों में कार्यालय का पूरा पता, किसको रिपोर्ट करनी है आदि तक का विवरण नहीं है।

स्टाफ द्वारा ट्रान्सफर की आड़ में छँटनी के सशक्त विरोध की वजह से ट्रेनिंग व ट्रान्सफर की आड़ में पुराने मजदूरों की छँटनी की कार्रवाई भी अटक गई है। लेकिन..... लेकिन "जिन्दाबाद", "एकता" और "एक के साथ भी अन्याय नहीं होने देंगे" के नारों-भाषणों की ओट में छँटनी की नई एग्रीमेन्ट छिपी बैठी है।

(जानकारी हमने व्हर्लपूल कर्मचारियों की विज्ञप्ति और पर्चे से ली है।)

प्रकाशित

a ballad against Work

Write to us if you want to read this book.

The book is free.

विरोध और बदलाव के ठुमके

☺ सरल कदम जो सब मजदूर हर रोज उठा सकते हैं ☺

एक छोटी फैक्ट्री में

मजदूरों से दस्तखत करवाते थे कानूनी न्यूनतम वेतन की राशि पर लेकिन देते थे उससे 200-400 रुपये कम। "क्या करें ?" के बारे में काफी बातचीत होती थी। अलग-अलग फैक्ट्रियों की चर्चा करते हुये वरकर कहते थे कि यूनियन बनाने पर मैनेजमेन्ट वरकरों को निकाल देती है। लखानी शूज का उदाहरण काफी दिया जाता। लीडर नहीं बनाना है की बात वरकर अक्सर करते थे।

जून की तनखा जुलाई में दिये जाते वक्त वरकरों ने रजिस्टर में लिखे पैसे माँगे। मैनेजमेन्ट ने मना कर दिया। मजदूरों ने वेतन लेने से इनकार कर दिया। अलग-अलग करके मैनेजमेन्ट ने वरकरों को बुलाया और दबाव डाला। कोई लीडर नहीं था इसलिये किसी के खिलाफ एक्शन नहीं ले सकी। मजदूरों ने काम जारी रखा पर तनखा नहीं ली। तीन-चार दिन तक ऐसा रहा। मैनेजमेन्ट की प्रोडक्शन बढाने और पीस रेट की बातें वरकर नहीं माने। अगले महीने से रजिस्टर पर लिखी जाने वाली तनखा देने का आश्वासन दिया तब मजदूरों ने वेतन लिया।

जुलाई की तनखा अगस्त में देते समय मैनेजमेन्ट ने पुराने ढर्रे पर तनखा देनी चाही। वरकरों ने आश्वासन की बात याद दिला कर रजिस्टर में लिखी तनखा माँगी। एक-एक वरकर को फिर बुला कर मैनेजमेन्ट ने दबाव डाला। स्टाफ के लोगों से भी दबाव डलवाया। मजदूर अड़ गये, वेतन नहीं लिया। दो-तीन दिन ऐसे रहा। मैनेजमेन्ट को रजिस्टर में दर्ज 1600 रुपये के हिसाब से पैसे देने पड़े। मजदूरों ने 200-400 रुपये हासिल किये।

अपनी बात खुद लिखें या हमें बतायें।

नेता जी की बात का कैसे करें यकीन।
हम तो भूखे मर रहे आप अनुशासन में लीन।।
आप अनुशासन में लीन न समय पर वेतन वर्दी।
दादा डायरेक्टर कहता है कि ये मेरी मर्जी।।

कामरेड चिल्लाय रहे करके रहेंगे युद्ध।
जब तक चन्दा से नहीं मिले मुनाफा शुद्ध।।
मिलै मुनाफा शुद्ध हमी प्रोटेस्ट किये हैं।
दाढी रख कर समय कीमती वेस्ट किये हैं।।

29.8.97. — झालानी टूल्स का एक मजदूर

पँखा

58 बी इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित बेलमोन्ट रबड़ इन्डस्ट्रीज में स्टीम से माल पकाया जाता है। गर्मियों में हालात बर्दाश्त से बाहर हो जाती हैं। ऐसे में भी मैनेजमेन्ट जबरन ओवर टाइम काम करवाती।

गर्मी से कुछ राहत के लिये पँखा लगाने और बायलर व ट्युबिंग सैक्शन को अलग करने की मजदूरों की डिमान्ड को मैनेजमेन्ट अनसुना करती रहती।

जुलाई में एक दिन मजदूरों ने ओवर टाइम पर रुकने से इनकार कर दिया। मैनेजमेनट की एक नहीं सुनी। दूसरे दिन ही बेलमोन्ट रबड़ मैनेजमेन्ट ने पँखा लगा दिया और बायलर व ट्युबिंग सैक्शन के बीच में चिक लगा दी।

गत्तोंवाले

अपनी झिझक को दूर करते हुये, शर्म की नकेल को काटते हुये झालानी टूल्स के कुछ मजदूरों ने अगस्त में अपनी बातें अन्य मजदूरों के बीच पहुँचाने के लिये एक सरल कदम उठाया। यह वरकर आठ-आठ, दस-दस की टोलियों में गत्तों पर अपनी बातें लिख कर मजदूरों के बीच जा रहे हैं। सुबह की शिफ्टों के समय गत्ते ले कर एक दिन एक सड़क पर तो दूसरे दिन दूसरी सड़क पर खड़े हो रहे हैं। लन्च के समय एक दिन एक फैक्ट्री के गेट पर तो दूसरे दिन किसी अन्य फैक्ट्री के गेट पर। जब-तब शाम की शिफ्टें छूटने के समय भी किसी सड़क पर गत्ते लिये झालानी टूल्स मजदूरों की टोली खड़ी दिखती है। पचासवीं वर्षगाँठ वाले 15 अगस्त की सुबह गत्ते लिये मजदूरों की टोली मथुरा रोड़ पर दिखी।

गत्ते ले कर खड़े होने वाले झालानी टूल्स के मजदूर सड़कों पर और फैक्ट्री गेटों पर मिल रही मजदूरों की प्रतिक्रिया से बहुत उत्साहित हैं। "यह फैक्ट्री कहाँ है ?" जैसी जिज्ञासा से ले कर अनेकों सुझाव और टिप्पणियाँ बातचीत में उभरी हैं :

☯ हमारी फैक्ट्री के गेट पर आओ।

मजदूरों को मजदूरों के पास जाना चाहिये ही। ☯

हम डी.सी. को विरोध-पत्र जरूर देंगे।

कई वरकरों ने आर्थिक मदद की पेशकश की — गत्ते लिये खड़े मजदूरों ने पैसे की बजाय समर्थन में छोटे-छोटे कदम उठाने का अनुरोध किया।

मजदूरों के मजदूरों से जुड़ने में लीडर सबसे बड़ी बाधा हैं।

यह तो बहुत बढिया कदम है। इतने दिन क्या कर रहे थे ? पहले यह कदम क्यों नहीं उठाया ?

अमेटीप मशीन टूल्स, रेमिंगटन, प्रताप स्टील के मजदूरों ने कहा कि उन्हें भी कई महीनों से वेतन नहीं दिया गया है। गत्ते लिये खड़े मजदूरों ने उनसे कहा कि आप भी हमारी तरह गत्तों पर लिख कर टोलियों में अन्य मजदूरों के पास क्यों नहीं जाते ?

गत्तेवालों ने अपने 2183 सहकर्मियों से 300 - 400 गत्तेवाली टोलियों के गठन के लिये प्लान्टों में हाथ से लिख कर चिपकाये एक पर्चे में कहा है :—

अपने पैसे डूबने से बचाने के लिये बातचीत

झालानी टूल्स के साथी मजदूरो,

इन 17 महीनों में कुछ बातें जो हमारे सामने साफ-साफ आ चुकी हैं :

1. बकाया तनखा की रकम करोड़ों में हो गई है।
2. किसी भी लीडर, किसी भी झन्डे में हमारे पैसे दिलाने की क्षमता नहीं है।
3. डी.एल.सी. और डी.सी. के विभाग हमारे खिलाफ हैं।
4. अदालत में जाने का मतलब है अपने पैसों को डुबो देना।

यह सब जानते हुये हम पूछते हैं कि आप चुप क्यों बैठे हो ? रुपये-दो रुपये के लिये हम रोज झगड़ करते हैं परन्तु अपने एक लाख रुपये पर मौन हैं ! किस चीज का इन्तजार कर रहे हो ? कुयें में गिरने के लिये हाथ पर हाथ धरे बैठे क्यों हो ?

दोस्तो, हम कुछ लोग टोलियाँ बना कर सुबह-शाम की शिफ्टों के समय गत्तों पर लिख कर सड़कों पर खड़े हो रहे हैं। लन्च के समय हम गत्तों के साथ अलग-अलग फैक्ट्रियों के गेटों पर जा रहे हैं। हमारा दावा है कि झालानी टूल्स मजदूरों की टोलियाँ रोज 15 सड़कों के किनारे गत्ते ले कर सुबह-शाम खड़ी होंगी और लन्च के समय में 20 फैक्ट्रियों के गेटों पर जायेंगी तो इतना दबाव बनेगा, इतना प्रेशर बनेगा कि साहबों की सीटी बज जायेगी और चन्द दिन में हमारा पैसा हमें मिल जायेगा।

— झालानी टूल्स के कुछ मजदूर

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसेट।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73